PAGES ANSWER BOOK

विषय Subject: HINDI

विषय कोड Subject Code: 051

परीक्षा की दिनांक / Date of Exam: 020323

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper: HINDI

प्रश्न पत्र का सेट
Set of the Question paper: D

गोले भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :-
गलत तरीका :-

नोट :-
इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

कार्यालय उपयोग के लिए

ID NO. 6582806
SUB. 051 - HINDI
Bag. 60511022

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जा

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्र

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Oddy
Laser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4 99.1mm x 33.9mm x 16

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों केअनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नबर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक केहस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

2 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कु अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1 का उत्तर

(i) स) पैसे की

(ii) अ) दत्ताजी राव के यहाँ

(iii) ब) नासिक

(iv) स) शब्दालंकार

(v) अ) चावल कालों मे

(vi) द) कपड़े पहनाती है

BSE

प्रश्न क्र. 2 का उत्तर

(i) नौ वर्ष की उम्र

(ii) भूषण

(iii) कागज के पन्ने से

(iv) बिड़ला मन्दिर

(v) सरल वाक्य

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

(vi) मात्रिक

(vii) श्रोता

प्रश्न क्र. 3 का उत्तर

'क'		'ख'
(i) चित्रकार	-	चितेरा
(ii) सम्पादकीय पृष्ठ	-	अखबार की अपनी आवाज
(iii) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग	-	भक्तिकाल
(iv) छायावाद के प्रवर्तक कवि	-	जयशंकर प्रसाद
(v) मस्ती का सन्देश	-	हरिवंशराय बच्चन
(vi) चौपाई छन्द	-	16 मात्राएँ

④ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

BSE

प्रश्न क्र. 4 का उत्तर

(i) जयशंकर प्रसाद

(ii) लाल खड़िया या चाक

(iii) दोहा

(iv) मुहावरा

(v) उनकी आवाज के माध्यम से

(vi) खजूर और अंगूर

(vii) ढोलक की आवाज

प्रश्न क्र. 5 का उत्तर

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(v) सत्य

(vi) सत्य

प्रश्न क्र. 6 का उत्तर

जेब के भरे होने पर और मन के खाली होने पर मन बैचेन हो जाता है व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओ का ज्ञान नही होता है और इस प्रकार मन व्यर्थ की चमकती - धमकती चीजो की ओर आकर्षित होता है जिनकी आवश्यकता न होने पर भी उसे खरीदने को विवश हो जाता है. इसलिए व्यक्ति का मन भरा होना चाहिए उसे अपनी आवश्यकताओ का ज्ञान होना चाहिए जिससे उसका मन बैचेन और व्यर्थ की वस्तुओ की ओर आकर्षित न हो।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 7 का उत्तर [अथवा]

महादेवी वर्मा ने स्वयं व भक्तिन के मध्य सेवक - स्वामी के सम्बन्ध को नकारा है क्योकि कोई भी ऐसा स्वामी ~~न~~ होगा जो चाहकर भी अपने सेवक को न हटा पाए वही कोई भी ऐसा सेवक न होगा जो निकल जाने की आज्ञा पाकर हँस दे। परंतु भक्तिन महादेवी वर्मा के जीवन की अभिन्न ~~ह~~ अंग बन चुकी थी इसलिए उन्होने स्वयं व भक्तिन के मध्य सेवक - स्वामी के सम्बन्ध को नकारा है।

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर

लेखक के पिता ने आनंद श्राद्ध को पाठशाला भेजते समय शर्त रखी थी कि वह -

1) सुबह - सुबह खेतो मे पानी डालने जाएगा फिर बाद मे पाठशाला जाएगा

2) पाठशाला से आते ही वह पशुओ को चराएगा एवं बाकी के काम करेगा।

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 9 का उत्तर

नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखन से छात्रो में निम्नलिखित गुण विकसित होते है।-

1) छात्रो की सोचनै की शक्ति मे वृद्धि होती है।
2) छात्रो की जागरूकता बढ़ती है।
3) बाकी विषयो के बारे मे ज्ञान प्राप्त होता है।
4) उनके लेखन मे सुधार होता है।

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर (अथवा)

संदेह अलंकार - जब किसी वस्तु के विशेष गुण क्रिया को देखकर यह निश्चय न हो पायें की यह वही वस्तु है वहाँ ~~संदेहअलंकार~~ संदेह अलंकार होता है। इसमे अंत तक संशय की स्थिति बनी रहती है।

उदाहरण -

'साड़ी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है
सारी ही कि नारी है कि नारी ही की सारी है।'

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर (अथवा)

लक्षणा शब्द - शक्ति - जिस शब्द शक्ति से शब्द के प्रचलित या मुख्यार्थ के अतिरिक्त कोई विशेष अर्थ निकलता है तो वहा लक्षणा शब्द - शक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण - "रमेश तो बैल है।"

यहां रमेश की बुद्दि को बैल के समान बताया गया है।

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर

तकनीकी शब्द - किसी विषय से सम्बन्धित ऐसे शब्द जिनका प्रयोग मुख्य रूप से उन्ही विषय की चर्चा के लिए प्रयोग मे लाये जाते है वे तकनीकी शब्द कहलाते है।

उदाहरण - भौतिक विज्ञान मे प्रयुक्त तकनीकी शब्द जैसे "गुरुत्वाकर्षण" "वेग", "त्वरण" इत्यादि।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

(i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) जंगल मे शेर दहाड़ने लगा।

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर

कवि ने अपने खेत मे विचाररूपी बीज बोया था कवि कहते है कि वह इस विचाररूपी बीज मे कल्पनारूपी खाद डालेंगे जिससे एक शब्दरूपी नवांकुर फूटेंगे और अंत मे वह एक साहित्यिक रचना को उत्पन्न करेंगे जो छन्दबद्ध होगी।

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर

लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान जी गये थे। लक्ष्मणजी मेघनाद द्वारा छोड़ी गयी शक्ति से मूर्छित हो गय थे। जिससे प्रभु श्रीराम और पूरी वानर सेना अत्यन्त व्यथित हो गई थी।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

BSE

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर (अथवा)

गद्यांश

हास्य व्यंग्य _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ सीखें।

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक – "हास्य का जादू"

(ख) नीरस जीवन को "हास्य व्यंग्य" सुखद बना देता है।

(ग) सारांश –

" ~~प्रस्त~~ "हास्य-व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जो जीवन को खुशहाल बना देता है। यह किसी छूत के रोग की तरह चारों ओर फैल जाता है। सभी को हँसना चाहिए। जिस मनुष्य मुसीबतें झेली हो उसके लिए जीवन पहाड़ बन जाता है जिसे जीने योग्य बनाने के लिए हँसना जरूरी है। यह हमें संघर्ष तनाव घुटन आदि जो आज के जीवन में आम हैं उनसे बचने के लिए हँसना सीखना चाहिए।"

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर

कवि परिचय - "हरिवंशराय बच्चन"

(i) दो रचनाएँ - "मधुशाला" "प्रवासी की डायरी"।

(ii) भावपक्ष - कलापक्ष

क) भावपक्ष

1) प्रेम और सौन्दर्य - हरिवंशराय बच्चन जी की रचनाओ मे प्रेम और सौन्दर्य की एक अनुपम धारा प्रवाहित हुई है। इनका प्रेम और सौंदर्य वर्णन अद्भुत है।

2) हालावादी दर्शन - हरिवंशराय बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि हैं इसलिए उनकी रचनाओं मे हालावादी दर्शन दृष्टिगोचर है।

3) मानवतावादी दृष्टिकोण - बच्चन जी मात्र मस्ती का संदेश लिये फिरने वाली कवि नही है परन्तु उनकी रचनाओं मे उन्होने अपने विराट मानवतावादी दृष्टिकोण भी व्यक्त किये हैं।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

ख) कलापक्ष

1) भाषा - बच्चन जी की भाषा शुध्द सरल और साहित्यिक खड़ी बोली है। इन्होंने संस्कृत के तत्सम पदावली का भी प्रचुरता मे प्रयोग किया है इसके अतिरिक्त उर्दू फारसी, तद्भव शब्दो का भी प्रयोग किया है।

2) शैली - इनकी मुख्यत: प्रांजल शैली रही है।

3) अलंकार योजना - इनकी अलंकार योजना के अन्तर्गत इन्होंने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनो का सटीक प्रयोग किया है।

4) बिम्ब योजना - इनकी बिम्ब योजना सार्थक एवं सटीक, भावो के अनुरुप थी।

(iii) साहित्य मे स्थान - हरिवंशराय बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि है। इनकी रचनाए लोगो के लिए प्रेरणादायी रही है। हिन्दी काव्य साहित्य मे इनका अद्वितीय स्थान है। यह अपने योगदान के लिए सदैव याद किये जायेंगे।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

"प्रश्न क्र. 18 का उत्तर [अथवा]

साहित्यिक परिचय - "धर्मवीर भारती"

(i) दो रचनाएँ - "अन्धायुग", "गुनाहो का देवता"।

(ii) भाषा शैली

क) भाषा -

धर्मवीर भारती जी की भाषा सरल सुबोध, साहित्यिक खड़ी बोली है। इन्होने संस्कृत प्रधान साहित्यिक भाषा को अपनाया। कही-कही पर इन्होने तद्भव शब्द एवं उर्दू फारसी और अँग्रेजी भाषा के शब्दो का भी प्रयोग किया है। साथ ही रचनाओं मे चमत्कार प्रवाह उत्पन्न करने हेतु मुहावरे का भी सुंदर प्रयोग किया है। इस कारण इनकी भाषा बहुत आकर्षक बन जाती है।

ख) शैली -

1) वर्णात्मक शैली - रचनाओ मे जीवन्तता लाने के लिए इन्होने इस शैली का प्रयोग किया है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

2) भावात्मक शैली - मानवीय भावो को मर्मस्पर्शी रूप से प्रस्तुत करने के लिए इन्होने इसका प्रयोग किया है।

3) विचारात्मक शैली - गहन विषय और विचार प्रधान रचनाओ के लिए भारती जी ने इस शैली का प्रयोग किया है जिससे रचनाओ मे सहजता उत्पन्न हो गई है।

B
S
E

4) व्यंग्यात्मक शैली - मानवीय विसंगतिय, विकृतियो को चुटीले अंदाज मे प्रस्तुत करने हेतु इस शैली को अपनाया है।

(iii) साहित्य मे स्थान - धर्मवीर भारती जी की रचनाओ मे लोगो के जीवन को प्रभावित करने की शक्ति है। जैसे - "अन्धायुग"। इनकी रचनाए समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है। हिन्दी गद्य साहित्य मे धर्मवीर भारती अपने योगदान के लिए सदैव एक तारे के भांति चमकते रहेंगे।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से महान

जननी और जन्मभूमि दोनो का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है एक मनुष्य के जीवन का आरंभ जननी की कोख से होता है जननी ही उसे आधारभूत शिक्षा संसकार देती है। यह कार्य और कोई नही कर सकता है। वह अपने बच्चे को बाहरी दुनिया मे कैसे व्यवहार करना है यह सिखाती है। सच्चे अर्थों मे जननी एक मनुष्य की जीवन की राह तय करती है।

जन्मभूमि भी जननी के समान होती है जो सुख का अनुभव हमे हमारी जन्मभूमि से मिलता है वह हमें शायद ही दुनिया मे कही और प्राप्त होता है शायद स्वर्ग मे भी नही यह वह भूमि होती है जहा हमने इस संसार पे कदम रखा यह हमारे बाल्यावस्था की सभी यादो को सहेजकर रखती है। यह हमारे लिए बहुत मायने रखती है। इसलिए कहा गया है "जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान"।

B
S
E

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHO

प्रश्न क्र.

BSE

प्रश्न क्र. २० का उत्तर

निबंध
वृक्षों की उपयोगिता

प्रश्न रूपरेखा –

1) प्रस्तावना
2) वृक्षों की उपयोगिता
3) वृक्षों की कटाई
4) वृक्ष न होने के दुष्प्रभाव
5) वृक्षों को बढ़ाने के उपाय
6) उपसंहार

1) प्रस्तावना – वृक्ष मानव जीवन के आधार है। जब से मानव इस धरती पे आया है तब से वृक्ष उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे है। क्योंकि ये प्राकृतिक स्त्रोत है यह सभी ~~सभ~~ जगह होते है। इन्ही की वजह से मानव जीवन सम्भव है।

प्रश्न क्र.

2) वृक्षो की उपयोगिता - वृक्षो से हमे विभिन्न प्रकार की आवश्यक वस्तुए प्राप्त होती है। वृक्ष हमे आक्सीजन भी प्रदान करते है जो हमारे जीवन के लिये अत्यावश्यक है। यही नही वृक्ष से हमे लकड़िया फल इत्यादि प्राप्त होते है जिनसे हम बहुत कुछ उत्पन्न करते है जैसे - लकड़ियो का प्रयोग हम फर्नीचर बनाने मे घर बनाने मे करते है।

3) वृक्षो की कटाई - वृक्षो की इतनी अधिक मात्रा मे उपयोगिता होने के कारण आज ये भारी मात्रा मे काटे जा रहे है। वृक्षो की कटाई से हरित क्षेत्र कम हो रहा है मानव अपनी जरुरतो के लिए विभिन्न प्राणियो पशु पक्षियों के घरो को तबाह कर रहा है वृक्षो की भारी मात्रा मे कटाई आज की ज्वलंत समस्या बन गई है।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

4) वृक्षो के न होने का दुष्प्रभाव-
वृक्षो की कटाई से मानव जाति को भयंकर आपदाओ का सामना करना पड़ सकता है जैसे - ग्लोबल वार्मिंग बाढ़ सूखा भूकम्प इत्यादि। साथ ही हम अपने आने वाली पीढ़ियो के लिए भी प्राकृतिक संसाधन कम कर रहे है।

B
S
E

5) वृक्षो को बचाने का उपाय
वृक्षो की संख्या बचाने की कई उपाय है. हम लोगो को इस बारे मे जानकारी दे सकते है तथा उन्हे वृक्षारोपण के लिए प्रेरित कर सकते है। सरकार को भी कठोर प्रयास करने चाहिए तथा वृक्षो को ज्यादा कटाई पर रोक लगानी चाहिए।

6) उपसंहार - प्राकृतिक संसाधनो का सही मात्रा मे उपयोग मानव की भलाई मे है, अन्यथा एक दिन कुछ शेष नही रहेगा अतः हमे वृक्षो की उपयोगिता को समझना चाहिए।

प्रश्न क्र.

उसी मे हम सब की भलाई है। यह हमारा कार्य है कि हम इनकी रक्षा करे।

"वृक्ष लगाओ - भविष्य बचाओ"

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर (अथवा)

तिरती है .... बादल।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक आरोह के पद्यखण्ड मे संकलित कविता "बादर राग" से ली गई है। इसके रचयिता "सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" जी है।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश मे कवि ने क्रान्तिरूपी बादलों का आवाह्न किया है। उससे होने वाले परिणामो को बताया है।

व्याख्या - प्रस्तुत पद्यांश मे कवि निराला जी कहते है कि जिस तरह सागर पर पवन की छाया तैरती रहती है उसी प्रकार अखिल सुख पर दुःख की छाया मण्डराती रहती है। कहने का

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

अर्थ यह है कि सुख अस्थिर होते है।
बादलो के क्रान्तिरूपी आगमन से
पीड़ितो, शोषितो की अत्याचारो से
मुक्ति की उम्मीद बढ़ जाती है
जिस तरह एक नवांकुर धरती के
ऊपर से आसमान की ओर
वर्षा की उम्मीद करता है।
उसी प्रकार यह शोषित वर्ग भी
बादलो से क्रान्ति की उम्मीद करते है।
कवि आगे कहते है कि हे बादल।
यह तेरी युद्ध नौका है जो दबे
कुचले लोगो की आकांक्षाओ से
भरी हुई है। तेरी नगाड़े जैसी
गर्जन से लोगो को उम्मीद
मिलती तथा वे ऐसे तेरी ओर
देखते है जैसे एक नवांकुर
धरती से सिर निकालकर बादलो
की ओर वर्षा के लिए।

BSE

विशेष – 1) भाषा सरल सुबोध, साहित्यिक खड़ी बोली है।

2) समीर - सागर जैसे सामासिक पदो का प्रयोग हुआ है।

(21) + पृष्ठ 21 के अंक

भाग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 21 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर

एक बार - - - - - - - - - - - - - - - थे।

सदंर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह के गद्यखण्ड के आंचलिक कहानी "पहलवान की ढोलक" से लिया गया है। इसके रचयिता "फणीश्वर नाथ" रेणु जी है।

B
S
E

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश मे लेखक ने बताया है कि किस प्रकार लुट्टन पहलवान जोश मे पजांब से आये "शेर के बच्चे" से प्रसिद्द पहलवान को चुनौती देता है।

व्याख्या - लेखक कहते है कि एक बार लुट्टन पहलवान श्यामनगर के मेले मे "दंगल" देखने गया जवानी की मस्ती जोश मे उसे पहलवानो की 'कुश्ती' और उनके दाँव - पेंच देखकर रहा नही गया उसके सब्र का बांध टूट गया। उसके जवानी कि मस्ती और जोश ने उसके शरीर पर

प्रश्न क्र.

उसकी नसों मे बिजली उत्पन्न कर दी अर्थात् उसका विश्वास बढ़ा दिया। फिर उसने बिना सोचे-समझे दंगल मे "शेर के बच्चे" नाम से प्रसिद्ध पंजाब के माय पहलवान चाँद सिंह को चुनौती ~~द~~ दे डाली की उससे पहलवानी करे। लुट्टन पहलवान की चुनौती पाकर चाँद सिंह भी पहलवानी के लिए तैयार हो गया।

BSE

विशेष -

1) भाषा सरल सुबोध साहित्यिक खड़ी बोली है।

2) "दंगल" जैसे देशज शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर (अथवा)

दिनेश नगर
45 B, रतलाम (म.प्र.)

दिनांक - 11/10/23

आदरणीय पिताजी
सप्रेम नमस्कार
मैं यहां कुशल मंगल हूं और आशा करता हूं कि आप भी वहां सुखी होंगे, मेरी परीक्षा मे बस कुछ ही दिनो का समय शेष रह गया है। मैंने लगभग सभी विषयो की तैयारी कर ली है साथ ही नियमित पुनरावलोकन भी किया है जिन विषयो मै मुझे कोई परेशानी रहती है उन्हे मै सम्बन्धित शिक्षको से पूछ लेता हूं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपको अच्छा परिणाम दूंगा।
माताजी को चरण स्पर्श एवं छोटी बहन को स्नेह।

आपका पुत्र
राकेश

B
S
E